Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ذٰلِكَ هُوَالْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

(सूरः तौबा : 72)

अनुवाद : अल्लाह ने मौमिन मर्दों और मौमिन औरतों से ऐसी जन्नतों का वादा किया है जिनके दामन में नहरें बेहती होंगी वे उनमें हमेशा रहने वाले हैं। इसी तरह बहुत पवित्र खुरों का भी जो दायमी जन्नतों में होंगे। जबकि अल्लाह की रज़ा सबसे बढ़कर है। यही बहुत बड़ी सफलता है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक 15

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

01 शवाल 1445 हिज्री कमरी, 11 शहादत 1403 हिज्री शम्सी, 11 अप्रैल 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

चांद देखकर रोज़ा शुरू करो और चांद देखकर इफ़तार करो

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम चांद देख कर रोज़ा शुरू करो और चांद देखकर इफ़तार करो अर्थात ईद मनाओ और अगर धुंद या बादल की वजह से उनत्तीस तारीख़ को चांद न देख सको (या चांद उस रोज़ हुआ ही न हो) तो शाबान और इसी तरह रमज़ान के तीस दिन पूरे करो

(बुख़ारी, किताबुल् सोम, बाब क़ौलुल् न्नबी(-सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) اذا رأیتم الھلال فصوموا

शवाल के रोज़े

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े रखे। उसके बाद (ईद का दिन छोड़कर) शवाल के भी छः रोज़े रखे उसको इतना सवाब मिलता है जैसे उसने साल भर के रोज़े रखे हों। (क्योंकि एक रोज़े का दस गुना सवाब मिलता है)

(मुस्लिम, किताबुल् सियाम,बाब استحباب صوم ستة ایام من شوال)

★ ★ ★

याद रखना चाहिए कि ईद वाला दिन तो ज़्यादा इबादत का दिन है आम दिनों में तो पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और ईद वाले दिन छः नमाज़ें फ़र्ज़ हैं

यह अह्द करना चाहिए कि मैं अल्लाह तआला के हक़ अदा करने की भी मुस्तक़िल कोशिश अब करता रहूँगा और बंदों के हक़ अदा करने की भी नियमित कोशिश करता रहूँगा, तभी हमारी ईदें हक़ीक़ी ईदें होंगी।

रमज़ान ख़त्म होने और ईद मनाने को हमें अपनी इबादतों से रुख़स्त या कमी या पूरा एहतिमाम न करने का इजाज़तनामा नहीं समझ लेना चाहिए

ये इबादतें ही हैं जो हमारी दुनयावी और आख़िरी ज़िंदगी में अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस बनाने की बनेगी

इरशाद-ए-आलिया सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

अल्लाह तआला आज हमें ईद मनाने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा रहा है लेकिन एक मौमिन के लिए हक़ीक़ी ईद सिर्फ यही नहीं कि अच्छे कपड़े पहन लिए, अच्छे खाने खा लिए, दोस्तों के साथ मज्लिस में बैठ कर ख़ुश गपियों में वक़्त गुज़ार लिया। ईद की नमाज़ पढ़ कर समझ लिया कि अब ईद का फ़र्ज़ तो अदा हो गया इसलिए अब खुली छुट्टी है जो चाहे करो। न उस दिन वक़्त पर ज़ुहर की नमाज़ की अदायगी का ख़्याल, न अस्र की नमाज़ का ख़्याल, न बाक़ी नमाज़ों का ख़्याल और अगर ख़्याल आया भी तो जल्दी जल्दी जमा कर के पढ़ लें बल्कि कुछ लोग तो ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ते और जब ईद की नमाज़ हो जाती है तो बड़े एहतिमाम से उठकर तैयार हो कर ईद के दिन की जो दूसरी रौनक़ें हैं उनमें व्यस्त हो जाते हैं जैसे यही ईद का उद्देश्य है। यह मैं सिर्फ बात बराए बात नहीं कर रहा बल्कि मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ते और कह देते हैं कि हमें नींद आ गई थी, हम सोए रहे।

याद रखना चाहिए कि ईद वाला दिन तो ज़्यादा इबादत का दिन है। आम दिनों में तो पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और ईद वाले दिन छः नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। यहाँ तक कि औरतों को भी जिन्हें बाअज़ दिनों में नमाज़ माफ़ होती है उन्हें भी ईद वाले दिन ईद-गाह जाने का हुक्म है। अतः ईद के दिन की बहुत एहमियत है .. ईद वाले दिन सिर्फ एक तहवार मनाने की तरह जमा होने का दिन नहीं है बल्कि इस में अल्लाह तआला ने जो हमारे सपुर्द काम किए हैं उनका आम दिनों से बढ़ कर हक अदा करना ज़रूरी है। अपनी इबादत के भी हक़ अदा करना ज़रूरी है और बंदों के हक़ अदा करने की जो हर मौमिन की ज़िम्मेदारी है उसे अदा करना भी ज़रूरी है। इस दिन यह अह्द करना चाहिए कि मैं अल्लाह तआला के हक़ अदा करने की भी मुस्तक़िल कोशिश अब करता रहूँगा और बंदों के हक़ अदा करने की भी नियमित कोशिश करता रहूँगा, तभी हमारी ईदें हक़ीक़ी ईदें होंगी। अतः ऐसी ईदों को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने हमें इन हुक़ूक़ की अदायगी की क़ुरआन-ए-करीम में बहुत जगह तवज्जा दिलाई है। अगर हम आज ईद के दिन यह अह्द करते हुए इन हुक़ूक़-ओ-फ़रायज़ की अदायगी पर तवज्जा दें कि आगे हमने उनको अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाना है जिनका मैं उमूमी तौर पर पिछले जुमाओं के ख़ुत्बात में भी वर्णन करता रहा हूँ। तो हमने अपने रमज़ान के उद्देश्य को प्राप्त कर लिया और ईद मनाने के उद्देश्य को भी पाने वाले होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः अल् निसा आयत नंबर : 37 के हवाले से फ़रमाया कि इस में अल्लाह तआला ने कुछ फ़रायज़ की तरफ़ तवज्जा दिलाई है, और यह अदा न करने वाले घमंड करने वाले और शेख़ी बघारने वाले हैं और ऐसे लोगों को अल्लाह तआला पसंद नहीं करता। अतः जिन्हें अल्लाह तआला पसंद नहीं करता

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सलामत हैं तो मुझे किसी नुक़्सान की पर्वा नहीं

उहद की जंग के दौरान एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों बराबर तीर चलाते जाओ

साद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी आख़िरी उम्र तक इन शब्दों को निहायत फ़ख़र के साथ वर्णन करते थे
ख़ुदा तआला की मर्ज़ी थी कि उहद के शुहदा उहद में ही दफ़न हों

बताओ कि अगर ऐसे लोगों के विषय में यह न फ़रमाया जाता कि مِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰى نَحۡبَهٗ तो दुनिया में और कौन सी क़ौम थी जिसके विषय में यह शब्द बोले जाते

वे लोग दरअसल ख़ुदा तआला के आशिक़ थे और चूँकि ख़ुदा तआला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यार करता था इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्यार करते थे

मक्का वालों को जो बदर में शिकस्त मिली उसको कमज़ोरी, बेचेनी और घबराहट से वसूल किया और मदीना ने अपनी उहद की मुसीबत को बेनज़ीर सब्र-ओ-ईमान और सब्र, धैर्य शुजाअत से वसूल किया। .. मदीना की फ़ौज को उहद में जो नुक़्सान पहुंचा उसकी वजह से मदीना के बाशिंदों में से किसी को घबराहट, इज़्तेराब और कमज़ोरी का कोई निशान नहीं था

उहद की जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुबूलियत-ए-दुआ और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो और सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ुर्बानियों और इशके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

श्रीमान ताहिर इक़बाल चीमा साहिब इब्न ख़िज़र हयात चीमा साहिब सदर जमात अहमदिया चक चौरासी (84) फ़तह ज़िला बहावलपुर की शहादत। मरहूम का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 08 मार्च 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

उहद की जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ की कबूलियत।

जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबी हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ की क़बूलियत के लिए की थी। इस के वाक़िया का इस प्रकार वर्णन मिलता है। आयशा बिंत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पिता हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। वह फ़रमाते हैं जब लोगों ने पलट कर हमला किया तो मैं एक तरफ़ हो गया। मैं ने कहा उनको ख़ुद से हटा दूँगा। या तो मैं ख़ुद नजात पा जाऊँगा और या मैं शहीद हो जाऊंगा तो अचानक मैं ने एक लाल चेहरे वाले व्यक्ति को देखा। कहते हैं क़रीब था कि मुशरेकीन उन पर ग़ालिब हो जाएं तो इस व्यक्ति ने अपना हाथ कंकरियों से भर कर उनको मारा तो अचानक मेरे और इस व्यक्ति के मध्य मिक़दाद आ गए। मैं ने मिक़दाद से पूछने का इरादा किया तो उन्होंने मुझे कहा कि साद! यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और फिर कहा कि तुझे बुला रहे थे। मैं खड़ा हुआ और मुझे ऐसा लगा गोया कि मुझे कोई तकलीफ़ ही नहीं पहुंची। पहले ज़ख़मी हालत में थे या तकलीफ़ थी। कहते हैं उस के बाद मैं उस आवाज़ को सुनकर एक दम खड़ा हुआ और मुझे लगा जैसे मुझे कोई तकलीफ़ नहीं। कहते हैं कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने सामने बिठा लिया। और मैं तीर मारने लगा तो मैं कहता अल्लाह! तेरा तीर है, तू इस को अपने दुश्मन को मार दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते हे अल्लाह तू साद की दुआ क़बूल कर ले। हे अल्लाह साद के निशाने को दरुस्त कर दे। हे साद तुझ पर मेरे माँ और बाप फ़िदा हूँ। अतः मैंने जो तीर भी चलाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के साथ ये फ़रमाते थे। हे अल्लाह इस के निशाने को दरुस्त कर दे और इस की दुआ को क़बूल कर ले। यहाँ तक कि जब में अपने तरकश के तीर चला कर फ़ारिग़ हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने तरकश के तीर फैला दिए और मुझे एक बग़ैर पैकान और बग़ैर पर के तीर दिया और न उसका कोई सिरा था न पीछे से सही तरह उस की बनावट थी। कहते हैं वह तीर दिया और वह तीर दूसरे तीरों से ज़्यादा तेज़ निकला। अल्लामा ज़हरी ने लिखा है कि उस दिन साद ने एक हज़ार तीर चलाए थे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 200-201 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में यूं लिखा है कि साद बिन वक्क़ास को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद तीर पकड़ाते जाते थे और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ये तीर दुश्मन पर बे तहाशा चलाते जाते थे।

एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों बराबर तीर चलाते जाओ। साद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी आख़िरी उम्र तक इन शब्दों को निहायत गर्व के साथ वर्णन किया था।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ : 495)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद की जंग के दिन अपने तरकश से तीर निकाल कर मेरे लिए बिखेर दिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तीर चुलाओ। तुझ पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब अज़ हिम्मत तायफ़तान मिनकुम हदीस : 4055)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुक्म से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ालिद बिन वलीद की कमान में पहाड़ पर हमले को किस तरह नाकाम बनाया।

इस बारे में इस प्रकार वर्णन मिलता है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की जमाअत के साथ इस चट्टान पर क़ियाम फ़र्मा थे। अचानक क़ुरैश की एक जमात पहाड़ के ऊपर पहुंच गई। इस जमाअत में ख़ालिद बिन वलीद भी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुश्मन को ऊपर देख कर दुआ की कि اَللّٰهُمَّ إِنَّهٗ لَا يَنْبَغِي لَهُمْ أَنْ يَعْلُوْنَا، اَللّٰهُمَّ لَا قُوَّةَ لَنَا إِلَّا بِكَ۔ । हे अल्लाह उनके लिए जायज़ नहीं कि वह हम पर ग़ालिब आएं। हे अल्लाह हमारी ताक़त वक़्त नहीं है मगर सिर्फ तेरे ही द्वारा। इसी वक़्त हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहाजेरीन की एक जमाअत के साथ उन लोगों का मुक़ाबला किया और उन्हें पीछे धकेल कर पहाड़ी से नीचे उतरने पर मजबूर कर दिया। इस वाक़िया के सिलसिला में अल्लाह तआला का यह इरशाद नाज़िल हुआ وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ(आले इमरान : 140)और कमज़ोरी न दिखाओ और ग़म न करो जबकि निसन्देह तुम ही ग़ालिब आने वाले हो अगर तुम मौमिन हो।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 323 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाक़िया को वर्णन करते हुए कहते हैं कि "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दर्रा में पहुंच गए तो क़ुरैश के एक दस्ते ने ख़ालिद बिन वलीद की कमान में पहाड़ पर चढ़ कर हमला करना चाहा लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने चंद मुहाजेरीन को साथ लेकर उसका मुक़ाबला किया और उसे पसपा कर दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए. पृष्ठ 497)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़ख़मी होने के बावजूद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़िक्र करने बारे में एक रिवायत में है हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जब यौम-ए-उहद का वर्णन करते तो फ़रमाते। वह दिन सारे का सारा तलहा का था। फिर उसकी तफ़सील बताते कि मैं इन लोगों में से था जो उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ वापस लौटे थे तो मैं ने देखा कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए लड़ रहा है। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बचा रहा था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने काश! तल्हा हो। मुझ से जो अवसर रह गया सो रह गया और मैंने दिल में कहा कि मेरी क़ौम में से कोई व्यक्ति हो तो यह मुझे ज़्यादा पसंदीदा है। बहरहाल कहते हैं कि मेरे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मध्य एक व्यक्ति था जिसको में नहीं पहचान सका हालाँकि मैं इस व्यक्ति की निसबत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़्यादा क़रीब था और वह इतना तेज़ चल रहा था कि मैं इतना तेज़ न चल सकता था। तो देखा कि वह व्यक्ति अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो थे। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निचला चौथा दाँत अर्थात सामने वाले दो दाँतों और नोकीले दाँत के मध्य वाला दाँत टूट चुका था और चेहरा ज़ख़मी था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र बाल में कवच की कड़ियाँ धँस चुकी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम दोनों अपने साथी की मदद करो। इससे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुराद तलहा थी और उनका ख़ून बहुत बह रहा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बजाय यह कि मुझे देखो, फ़रमाया कि तलहा को जा के देखो।

(सबलुल् हुदा भाग 4 पृष्ठ 199 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

उनका क्या हाल है उनकी ख़ातिर करो देखो उनके ज़ख़मों को ठीक करने की कोशिश करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़ियाद बिन सकन से मुहब्बत-ओ-शफ़क़त का सुलूक और उन की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रमे का वर्णन भी मिलता है। इस बारे में इब्न-ए-इसहाक ने लिखा है। जब कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को घेर लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। مَنْ رَجُلٌ يَّشْرِيْ لَنَا نَفْسَهٗ कौन व्यक्ति है जो हमारे लिए ख़ुद को बेच दे? तो ज़ियाद बिन सकन पाँच अंसारी सहाबा के साथ खड़े हुए और कुछ लोग कहते हैं कि वह उमारा बिन यज़ीद बिन सकन थे। तो यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दाद-ए-शुजाअत देते-देते एक एक कर के शहीद होते रहे यहाँ तक कि उनमें से आख़िरी ज़ियाद या अम्मारा थे। ये लड़ते रहे यहां तक कि उनको कई ज़ख़म लगे फिर मुस्लमानों की एक जमात लौट आई और मुशरेकीन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से धकेल दिया तो उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। ज़ियाद बिन सकन को मेरे क़रीब करो तो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना क़दम मुबारक उनका तकिया बना दिया और उनकी मौत इस हाल में हुई कि उनका बाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक पर था और उनके जिस्म पर चौदह घाव आए थे।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 203 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

यह वाक़ियात पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। कुछ में कोई नई बातें होती हैं, चंद एक नए फ़िक़रे होते हैं। कुछ और अंदाज़ होता है इसलिए दुबारा वर्णन कर देता हूँ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उहद से मदीना के विषय में रिवायात में वर्णन है कि ग़ज़वा उहद के दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुहदा-ए उहद की तकफ़ीन-ओ-तदफ़ीन के बाद मदीना वापस तशरीफ़ ले आए।

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 55 नाशिर बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)

(सबलुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 227 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

और यह वर्णन भी मिलता है कि मग़रिब की नमाज़ मदीना में पढ़ी गई। इसलिए एक लेखक ने लिखा है कि मैदान-ए-उहद से मदीना वापसी हुई तो नमाज़ मग़रिब का वक़्त होने पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अज़ान दी। नमाज़ की अदायगी के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत साद बिन उबाह रज़ियल्लाहु अन्हो और साद बिन माज़ अन्हो के सहारे मस्जिद तशरीफ़ लाए। नमाज़ अदा करके आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर घर तशरीफ़ ले गए। नमाज़ इशा का वक़्त होने पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिर अज़ान कही लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नींद की वजह से तशरीफ़ नहीं ला सके। आराम फ़र्मा रहे थे, नींद ले रहे थे तो इस अज़ान के बाद जो नमाज़ का वक़्त था वह उस पर तशरीफ़ नहीं ला सके। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इंतेज़ार में बैठे रहे। यह नहीं कि वापस आ के नमाज़ पढ़ा दी बल्कि उनके इंतेज़ार में बैठे रहे। रात का काफ़ी हिस्सा गुज़र जाने पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नमाज़ के लिए आवाज़ दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हालत अब पहले से क़दरे बेहतर थी। इशा की नमाज़ पढ़ा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर तशरीफ़ ले गए। नमाज़ की जगह से घर तक अस्हाब-ए-रसूल सफ़ें बनाए खड़े थे। उनके मध्य में से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले ही घर को चले गए। अब की बार किसी सहारे की ज़रूरत नहीं पड़ी। पहले मग़रिब की नमाज़ पर आए थे तो सहारे से आए थे फिर आराम फ़रमाया। इशा की नमाज़ लेट पढ़ी और फिर नहीं आते न जाते सहारे की ज़रूरत नहीं पड़ी। इस दौरान में कुछ औरतों को हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए रोते तड़पते पाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस अमल से रोक दिया जैसा कि पिछले ख़ुतबा में इस का वर्णन भी हो चुका है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर तशरीफ़ ले जाने पर सिवाए पहरेदारों के समस्त पुरुष और महिलाएं अपने अपने घरों को चले गए।

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 63 नाशिर बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)

फिर वह जो डयूटी पर मौजूद थे वह वहां रहे।

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो यूं लिखते हैं कि "सारे इंतेज़ामात से फ़ारिग़ हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शाम के क़रीब मदीना की तरफ़ रवाना हुए।" सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए. पृष्ठ 502) अर्थात कि सारे काम हुए। यह नहीं कि ज़ख़मी थे तो फ़ौरी तौर पर आ गए बल्कि समस्त काम सरअंजाम दिए।

मदीना की औरतों का सब्र और रज़ा का उदाहरण इस बारे में पहले भी मैं औरतों की मिसालें दे चुका हूँ। कुछ और मिसालें हैं।

हज़रत हम्न बिनत हजश रज़ियल्लाहु अन्हा के जज़बात क्या थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ग़ज़वा उहद के बाद मदीना लौटे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी हज़रत हम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हो मिलीं। लोगों ने उन्हें उनके

भाई हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की ख़बर दी। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊनपढ़ा और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। फिर लोगों ने उन्हें उनके मामूं हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की ख़बर दी। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। फिर लोगों ने उनके पति हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की इत्तिला दी इस पर वह रोने लगीं और बेचैन हो गईं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत के लिए उसके पति का एक ख़ास मुक़ाम-ओ-मर्तबा होता है।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 396 प्रकाशन दारुल इब्ने हज़म बेरूत)

एक दूसरी रिवायत में हज़रत हम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में वर्णन मिलता है कि जब उनसे कहा गया कि तुम्हारा भाई शहीद कर दिया गया है तो उन्होंने कहा अल्लाह इस पर रहम करे और कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। लोगों ने कहा तुम्हारे पति भी शहीद कर दिए गए हैं। कहने लगीं ि कहाय अफ़सोस। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत को पति से ऐसा संबंध है जो किसी और से नहीं।

(सुंन इब्ने माजा किताब अल्जनायज़ बाब माजाआ फ़ील् बका अल्मियत हदीस : 1590)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने भी एक ख़िताब में हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के इस वाक़िया का अपने अंदाज़ में वर्णन किया है। जिसमें हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया और उनकी शहादत पर उनकी बीवी की जो भावनाएं थी उनका वर्णन किया था। कहते हैं कि वे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो या सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हा जिनके अक़रबा-ए-की संख्यान एक से ज़्यादा होती उनको ठहर ठहर कर इस अंदाज़ में ख़बर देते कि सदमा यकलख़्त दिल को मग़लूब न कर ले अर्थात उन शुहदा की संख्या जिनके क़रीबी रिश्तेदार थे अगर एक से ज़्यादा होती तो यह नहीं कि सारों के बारे में एक दम बता दिया बल्कि आहिस्ता-आहिस्ता बताते थे। पहले एक के बारे में बताया। फिर दूसरे के। फिर तीसरे के। इसलिए कि ज़्यादा सदमा न पहुंचे। इसलिए जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन हम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हा हाज़िर हुईं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे हम्ना! तू सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किस के सवाब की? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अपने मामूं हम्ज़ा की। तब हज़रत हम्ना जहश रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। غَفَرَ لَهٗ وَرَحِمَهٗ ـ هَنِيْئًا لَهُ الشَّهَادَةَ ـ इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम्ना! सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उसने अर्ज़ की कि यह किस के सवाब की? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने भाई अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो की। इस पर हम्ना ने फिर यही कहा कि इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। غَفَرَ لَهٗ وَرَحِمَهٗ هَنِيْئًا لَهُ الشَّهَادَةَ ـ फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे हम्ना! सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर यह किस के लिए? फ़रमाया मसअब बिन उमेर के लिए। इस पर हम्ना ने कहा हाय अफ़सोस। यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वाक़ई पति का बीवी पर बड़ा हक़ है जो किसी और का नहीं। हज़रत हम्ना जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि तू ने सिर्फ पति के लिए ऐसा कलिमा क्यों कहा? इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे उसके बच्चों की यतीमी याद आ गई थी जिससे मैं परेशान हो गई और परेशानी की हालत में यह कलिमा मेरे मुँह से निकल गया। यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसअब की औलाद के हक़ में दुआ की कि हे अल्लाह उनके सिर परस्त और बुज़ुर्ग उन पर शफ़क़त और मेहरबानी करें और उनके साथ अच्छे सुलूक से पेश आवें।

(उद्धृत ख़ताबात ताहिर क़बल अज़ ख़िलाफ़त पृष्ठ 363)

हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो जिनका वर्णन मैं पिछले किसी ख़ुतबा में कर चुका हूँ उनके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के बारे में इस प्रकार वर्णन मिलता है कि उनके पति भाई और बेटे की शहादत का जब उन्हें पता चला कि तीनों शहीद हो गए थे जैसा कि वर्णन पहले भी हुआ था तो ये तीनों को पहले मदीना लाने के लिए लेकर आरही थीं लेकिन फिर वापस ले गईं। और इस की तफ़सील यूं वर्णन है कि :

ख़ुदा तआला की मर्ज़ी थी कि उहद के शुहदा उहद में ही दफ़न हों।

यहां तक तो पहले भी मैं बता चुका हूँ। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा जो उहद की ख़बर लेने के लिए निकली थीं उन्होंने हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा से जो उहद से आ रही थीं ख़ैर मालूम की तो इस पर हज़रत हिन्दर ज़ि य ल्ला हु अन्हो ने जो जवाब दिया उस का जैसा कि मैंने कहा पिछले ख़ुतबा में वर्णन कर चुका हूँ मज़ीद उसकी तफ़सील यूं है कि हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बख़ैरियत हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक मुसीबत आसान है। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैरीयत से हैं तो फिर कोई ऐसी बात नहीं। इस के बाद हज़रत हिंद ने यह आयत पढ़ी

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ـ وَ كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ـ وَ كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا

(अल् अहज़ाब : 26)

अर्थात और अल्लाह ने उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया उनके ग़ैज़ समेत इस तरह लौटा दिया कि वह कोई भलाई हासिल नहीं कर सके और अल्लाह मौमिनों के हक़ में क़िताल में काफ़ी हो गया और अल्लाह बहुत क़वी और कामिल ग़लबा वाला है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दरयाफ़त किया कि ऊंटनी पर कौन कौन हैं? तब हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि मेरा भाई है, मेरा बेटा ख़िलाद है और मेरे पति अम्र बिन जमूह हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दरयाफ़त किया कि तुम उन्हें कहाँ ले जाती हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि उन्हें मदीना में दफ़न करने के लिए ले जा रही हूँ। फिर वह अपने ऊंट को हाँकने लगें तो ऊंट वहीं ज़मीन पर बैठ गया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि इस पर वज़न ज़्यादा है? जिस पर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि ये तो दो ऊंटों जितना वज़न उठा लेता है लेकिन इस वक़्त यह उस के बिल्कुल उलट कर रहा है। फिर उन्होंने ऊंट को डाँटा तो वो खड़ा हो गया। जब उन्होंने उस का रुख मदीना की तरफ़ किया तो वह फिर बैठ गया फिर जब उन्होंने उस का रुख उहद की तरफ़ फेरा तो ऊंट जल्दी जल्दी चलने लगा। फिर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वाक़िया की ख़बर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह ऊंट मामूर किया गया है अर्थात उस को अल्लाह तआला की तरफ़ से इसी काम पर लगाया गया था कि यह मदीना की तरफ़ न जाए बल्कि उहद की तरफ़ ही रहे। फ़रमाया कि क्या तुम्हारे पति ने जंग पर जाने से पहले कुछ कहा था? कहने लगीं जब अम्र उहद की जानिब रवाना होने लगे थे तो उन्होंने क़िबला रुख हो कर यह कहा था कि अल्लाह! मुझे मेरे अहल की तरफ़ शर्मिंदा कर के नहीं लौटाना और मुझे शहादत नसीब करना। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसी वजह से ऊंट नहीं चल रहा था। फ़रमाया कि हे अंसार के गिरोह तुम में से कुछ ऐसे नेको कारलोग हैं कि अगर वह ख़ुदा की क़सम खा कर कोई बात करें तो ख़ुदा तआला उनकी वह बात ज़रूर पूरी करता है और अम्र बिन जम्वा भी उनमें से एक हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अम्र बिन जम्वा की बीवी को फ़रमाया। हे हिंद जिस वक़्त से तेरा भाई शहीद हुआ है इस वक़्त से फ़रिश्ते इस पर साया किए हुए हैं और इंतेज़ार में हैं कि उसे कहाँ दफ़न किया जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन शुहदा की तदफ़ीन तक वहीं रुके रहे। फिर फ़रमाया हे हिंद अम्र बिन जमू, तेरा बेटा ख़िलाद और तेरा भाई अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नत में बाहम दोस्त हैं। इस पर हिंद ने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे भी उनकी रिफ़ाक़त में पहुंचा दे।

(किताबुल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

साद बिन अबी वक्क़ास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू दीनार की एक औरत के पास से गुज़रे जिसका पति, भाई और बाप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उहद के युद्ध में शरीक हुए थे और वह सब शहीद हो गए थे। जब उनकी ताज़ियत उस औरत से की गई तो उसने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? तो लोगों

ने कहा कि हे उम्मे अमुक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ठीक हैं और अल्हम्दुलिल्ला ऐसे ही हैं जैसे कि तू पसंद करती है। तो इस औरत ने जवाब दिया कि मुझे दिखाओ। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखना चाहती हूँ तो फिर उस औरत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ इशारा कर के दिखाया गया। जब उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा तो कहने लगी कि :

हर मुसीबत आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद मामूली है।

(सीरत इब्ने हशशम पृष्ठ 545 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक और रिवायत में इस औरत के बेटे के शहीद होने का वर्णन भी मिलता है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि उहद की जंग के अवसर पर जब अहल-ए-मदीना बहुत घबराहट का शिकार हो गए क्योंकि यह अफ़्वाह फैल गई थी कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया गया है यहाँ तक कि मदीना के गली कूचों में चीख़-ओ-पुकार मच गई थी तो एक अंसारी ख़ातून परेशान हो कर घर से निकली। उसने आगे अपने भाई, बेटे और पति की लाश देखी। रावी कहते हैं कि मैं नहीं जानता कि पहले उसने किस को देखा था परंतु जब वह आख़िरी के पास से गुज़री तो उसने पूछा यह कौन हैं? लोगों ने बताया कि तेरा भाई, तेरा पति और तेरा बेटा है। उसने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? लोगों ने कहा वह आगे हैं। वह औरत चलती हुई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दामन थाम लिया और फिर कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सलामत हैं तो मुझे किसी नुक़्सान की कोई पर्वा नहीं।

(मोअज्जमुल् वस्तु भाग 5 पृष्ठ 329-330हदीस7499 दारुल फ़िकर बेरूत)

एक कथन के अनुसार इस औरत का नाम सुमेरा पुत्री क़ैस था जो नुमान बिन अब्दे अम्र की माता थीं

(किताबुल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 251 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक अवसर पर इस वाक़िया का वर्णन इस तरह किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो में इस बहादुरी की मिसालें बहुत कसरत से मिलती हैं। दुनयवी लोगों में तो करोड़ों लोगों और सैंकड़ों मुल्कों में से एक-आध मिसाल ऐसी मिल सकेगी परंतु सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में, चंद हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में सैंकड़ों मिसालें मिलती हैं। ठीक है दूसरों में मिल जाती हैं लेकिन करोड़ों में एक-आध मिसाल लेकिन यहां हज़ारों में सैंकड़ों मिसालें। कैसी आला दर्जा की यह मिसाल है जो एक औरत से संबंध रखती है।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं कई दफ़ा उसे वर्णन कर चुका हूँ और जो इस काबिल है कि प्रत्येक मजलिस में सुनाई जाए और इस की याद को ताज़ा रखा जाए। कुछ वाक़ियात ऐसे शानदार होते हैं कि बार-बार सुनाए जाने के बावजूद पुराने नहीं होते। ऐसा ही वाक़िया उस औरत का है जिसने उहद की जंग के अवसर पर मदीना में यह ख़बर सुनी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं वह मदीना की दूसरी औरतों के साथ घबरा कर बाहर निकली और जब पहला सवार उहद से वापस आते हुए उसे नज़र आया तो उसने उस से दरयाफ़त किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उसने कहा कि तुम्हारा पति मारा गया है। उसने कहा मैंने तुमसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ प्रश्न किया है और तुम मेरे पति की ख़बर सुना रहे हो। उसने फिर कहा कि तुम्हारा बाप भी मारा गया है परंतु इस औरत ने कहा मैं तुम्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ पूछती हूँ और तुम बाप का हाल बता रहे हो। इस सवार ने कहा कि तुम्हारे दोनों भाई भी मारे गए परंतु इस औरत ने फिर यही कहा कि तुम मेरे सवाल का जवाब जल्द दो। मैं रिश्तेदारों के मुताल्लिक़ नहीं पूछती। मैं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ पूछती हूँ। इस सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल चूँकि संतुष्ट था और जानता था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बख़ैरियत हैं। इसलिए उसके नज़दीक उस औरत के लिए सबसे अहम सवाल यही था कि इस के परिजनों की मौत से उसे आगाह किया जाए मगर इस औरत के नज़दीक सबसे प्यारी चीज़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात थी। इसलिए उसने झिड़क कर कहा कि तुम मेरे सवाल का जवाब दो। इस पर उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो ख़ैरीयत से हैं। यह सुन कर उस औरत ने कहा कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं तो फिर मुझे कोई ग़म नहीं, ख़ाह कोई मारा जाए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि और ज़ाहिर है कि इस मिसाल के सामने इस बुढ़िया की मिसाल की कोई हक़ीक़त नहीं जिसके मुताल्लिक़ ख़ुद नामा निगार को एतराफ़ है। अर्थात इस बुढ़िया का वर्णन जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो मिसाल दे रहे हैं। वह दूसरी जंग-ए-अज़ीम में जर्मनी की एक बूढ़ी औरत है जिसका बेटा एक जंग में मारा गया था और उसने एक मस्नूई क़हक़हा लगा कर इस ख़बर पर रद्द-ए-अमल का इज़हार किया था। यह ख़बर उन दिनों अख़बारों में आई थी कि यह देखो उस औरत ने कितने बड़े सब्र का मुज़ाहरा किया है। उस का बेटा मारा गया लेकिन उसने कोई ग़म नहीं किया और बड़ा क़हक़हा लगा कर उस पर सब्र का इज़हार किया, रद्देअमल ज़ाहिर किया। इस का वर्णन आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़र्मा रहे थे। तो फ़रमाते हैं यह इज़हार बोझ से दबा हुआ मालूम होता है गो उस औरत ने क़हक़हा तो लगाया लेकिन ये इज़हार जो है यह बोझ से दबा हुआ मालूम होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि वह दिल में रो रही थी अर्थात वह जर्मन औरत दिल में तो रो रही थी लेकिन ज़ाहिरी तौर पर उसने जुर्रत का इज़हार किया कि कोई बात नहीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि परंतु सहाबिया का वाक़िया यह नहीं है, यह नहीं है कि उसने ज़बत किया हुआ था और दिल में रो रही थी और ज़ाहिर नहीं कर रही थी बल्कि वह सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा तो दिल में भी ख़ुश थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं लेकिन इस औरत के दिल पर सदमा ज़रूर था कि वह उसे ज़ाहिर नहीं करना चाहती थी। अर्थात वह जर्मन औरत के दिल में तो बहरहाल सदमा था परंतु इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के दिल पर तो कोई सदमा भी नहीं था और यह ऐसी शानदार मिसाल है कि दुनिया की तारीख़ उस की कोई नज़ीर पेश नहीं कर सकती और बताओ कि अगर ऐसे लोगों के मुताल्लिक़ यह न फ़रमाया जाता कि مِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰى نَحۡبَهٗ तो दुनिया में और कौन सी क़ौम थी जिसके मुताल्लिक़ यह शब्द कहे जाते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं जब इस औरत का वाक़िया पढ़ता हूँ तो मेरा दिल उसके विषय में अदब और एहतेराम से भर जाता है और मेरा दिल चाहता है कि मैं इस मुक़द्दस औरत के दामन को छूओं और फिर अपने हाथ आँखों से लगाऊँ कि उसने मेरे महबूब रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए अपनी मुहब्बत की एक बेमिसल यादगार छोड़ी है।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 20 पृष्ठ 542-543)

फिर उसी इशक़-ओ-मुहब्बत का वर्णन करते हुए एक और जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह वर्णन फ़रमाया "देखो इस औरत को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किस क़दर इशक़ था। लोग उसे यके बाद दीगरे बाप, भाई और पति की वफ़ात की ख़बर देते चले गए लेकिन वह जवाब में प्रत्येक दफ़ा यही कहती चली गई कि मुझे बताओ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उद्देश्य यह भी एक औरत ही थी जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस क़दर इशक़ का मुज़ाहरा किया।"

(करूने उला की मुस्लमान महिलाओं का नमूना, अनवारुल उलूम भाग नंबर 25 पृष्ठ 440)

फिर एक दूसरी जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं कि ज़रा इस हालत का नक़्शा अपने ज़हनों में अब खींचो। तुम में से प्रत्येक ने मरने वाले को देखा होगा। कोई न कोई क़रीबी मरता है किसी ने अपनी माँ को, किसी ने बाप को, किसी ने भाई को, बहन को मरते देखा होगा। ज़रा वह नज़ारा तो याद करो कि किस तरह अपने अज़ीज़ों के हाथों में और घरों में अच्छे से अच्छे खाने पक्का कर और खा कर, ईलाज करवा कर और ख़िदमत करा कर मरने वालों की हालत क्या होती है और किस तरह घर में क़ियामत बरपा होती है और मरने वालों को सिवाए अपनी मौत के किसी दूसरी चीज़ का ख़्याल तक भी नहीं होता परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दिलों में ऐसा इशक़ पैदा कर दिया था कि उन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबला में किसी और चीज़ की पर्वा ही नहीं थी। परंतु यह इशक़ सिर्फ इस वजह से था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला के प्यारे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुहम्मद होने की वजह से यह इशक़ नहीं था बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रसूल अल्लाह होने की वजह से यहअ इशक़ था। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि वे लोग

दरअसल ख़ुदा तआला के आशिक़ थे और चूँकि ख़ुदा तआला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यार करता था इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्यार करते थे।

और सिर्फ मर्द ही नहीं बल्कि औरतों को भी देख लो उनके दिलों में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात के साथ क्या मुहब्बत और क्या इशक़ था। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि यह मुहब्बत थी जो ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ उन लोगों के दिलों में पैदा कर दी थी परंतु बावजूद उस के वह ख़ुदा तआला को प्रत्येक चीज़ पर मुक़द्दम रखते थे और यही तौहीद थी जिसने उनको दुनिया में प्रत्येक जगह ग़ालिब कर दिया था। ख़ुदा तआला के मुक़ाबला में वे न माँ बाप की पर्वा करते थे और न बहन भाईयों की और न बीवियों की और खाविंदों की। उनके सामने एक ही चीज़ थी और वह यह कि उनका ख़ुदा उनसे राज़ी हो जाए। इसी लिए अल्लाह तआला ने उनके लिए रज़ी अलल्लाहु उन फ़र्मा दिया। उन्होंने अल्लाह तआला को प्रत्येक चीज़ पर मुक़द्दम कर लिया और अल्लाह तआला ने उनको मुक़द्दम किया। परंतु हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बाद में मुस्लमानों की यह हालत न रही और अब अगर उनको अल्लाह तआला से संबंध है तो केवल दिमाग़ी है। दिमाग़ी तौर पर हम कहते हैं बड़ा संबंध है। दिमाग़ में ज़रूर है कि हम अल्लाह तआला को मानते हैं। तौहीद के क़ायल हैं। दिल में यह नहीं है। दिल कहीं और तरफ़ लगा हुआ है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन अगर उनके सामने किया जाए तो उनके दिलों में मुहब्बत की तारें हिलने लगते हैं। (उद्धृत ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 46-47) यह सब कुछ है लेकिन तौहीद की जो असल सूरत होनी चाहिए वह नहीं है।

एक सीरत निगार लिखता है। बिला-शुबा मदीना की मुसीबत बड़ी दर्दमंद मुसीबत थी लेकिन मक्का और मदीना के मध्य अपनी मुसीबत के वसूल करने में दूर दराज़ का फ़र्क़ था। बड़ी मुसीबत थी। मदीना में हालात बड़े ख़राब थे लेकिन अगर मक्का और मदीना का मुक़ाबला किया जाए। वहां भी मुसीबत थी। मक्का वालों को भी ख़तरा रहता था लेकिन बड़ा दूर दराज़ का फ़र्क़ था और फ़र्क़ क्या था? मुशरेकीन-ए-मक्का ने अपनी बदर की मुसीबत को कुछ कमज़ोरी, इज़तेराब और घबराहट से वसूल किया।

मक्का वालों को बदर में जो शिकस्त मिली उसको कमज़ोरी, इज़तेराब और घबराहट से वसूल किया और मदीना ने अपनी उहद की मुसीबत को बेनज़ीर सब्र-ओ-ईमान और सब्र, सबात-ओ-शुजाअत से वसूल किया।

अब उहद में मुस्लमानों को भी काफ़ी नुक़्सान पहुंचा लेकिन उनका यह बेनज़ीर सब्र था और ईमान था और सबात-ओ-शुजाअत थी जिससे उन्होंने इस को वसूल किया।

मदीना की फ़ौज को उहद में जो नुक़्सान पहुंचा उसकी वजह से मदीना के बाशिंदों में से किसी पर घबराहट, इज़तेराब और कमज़ोरी का कोई निशान नहीं था।

और इस की सबसे बड़ी दलील यह है कि एक मुस्लमान औरत ने मार्का उहद में अपने बेटे, पति, भाई और बाप को खो दिया और वह हैरान नहीं हुई और न ही इस मुसीबत ने उसे एतिदाल की हदूद से बाहर किया और वह बनू दीनार की औरत थी जो मैदान-ए-कार-ज़ार की तरफ़ गई और उसने अपने बेटे, पति, भाई और बाप को ख़ून में लुथड़े हुए मक़्तूल देखा तो उसने तवाज़ुन खोना तो कुजा पर्वा ही नहीं की और वह सिर्फ उस इन्सान के मुताल्लिक़ पूछती रही जो इन चारों से बढ़कर उसे महबूब था और वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। जब उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलामत देखा तो उसने कहा प्रत्येक मुसीबत ख़ाह वह कितनी ही बड़ी हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सलामती के मुक़ाबले में छोटी है।

(उहद के युद्ध अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 237-238 नफ़ीस अकैडमी करची)

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा फ़लस्तीन के लोगों के लिए दुआ करे।

अल्लाह तआला उनके लिए आसानियां पैदा फ़रमाए। दुश्मन तो अपनी समस्त-तर घटिया सोचो और हरकतों के ज़रीया उन्हें तबाह करने पर तुला हुआ है। बड़ी ताक़तें जंग को रोकने की बजाय उसे हवा देने की कोशिश कर रही हैं। अमरीका के सदर ने पहले पिछले पीर के दिन जंग बंदी के लिए कहा था। अब कहते हैं रमज़ान से पहले जंग बंदी होगी और वह भी आरिज़ी सिर्फ छः हफ़्ते के लिए। यह तो सिर्फ इसराईल को अवसर देने का एक हर्बा है कि इस दौरान उनको आराम भी मिल जाएगा और वह ताज़ा-दम हो कर फिर ज़ुलम शुरू कर देंगे।

अल्लाह तआला ही है जो उनके हाथों को रोक सकता है। इसलिए बहुत दुआ करें।

इसी तरह जिस चैरिटी तंज़ीम के ज़रीया से उनको ख़ुराक या दवाईयां इत्यादि या किसी तरह की मदद मिल सकती है वह अहमदियों को करनी चाहिए। अपने हलक़ा में उनके हक़ में ज़ुलम के ख़त्म करने के बारे में कोशिश भी करनी चाहिए। मैंने पहले भी कहा था सियासतदानों को ख़ुतूत लिखें और ये लिखते रहें, हमें थकना नहीं चाहिए। सियासतदानों को समझाएँ कि जो भी तुम लोग कर रहे हो बड़ा ग़लत कर रहे हो। फ़लस्तीनियों को भी अल्लाह तआला दुआओं और अपनी रुहानी हालतों को बेहतर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

यूकरेन और रूस की जंग में भी जिसमें यूरोप और अमरीका के बराह-ए-रास्त शामिल होने की ख़बरें आ रही हैं इस से भी आलमी जंग के ख़तरात मज़ीद बढ़ रहे हैं। इस के लिए भी जहां दुआ करें कि अल्लाह तआला दुनिया को तबाही से बचाए। वहां एहतियाती तदाबीर के तौर पर जैसा कि पहले भी मैंने कहा था और पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह भी एक नुस्ख़ा ऐटमी असरात से बचने का दे चुके हैं जमात में काफ़ी प्रचलित है। होमोयोंपैथिक का जो हमारा विभाग है वह बता भी देगा। इस का भी कम से कम एक कोर्स तीन तीन ख़ुराकों का दुबारा कर लेना इसी तरह अहमदियों को दो तीन महीने का राशन भी घरों में रखना चाहिए और खासतौर पर जहां बराह-ए-रास्त जंग का ख़तरा है।

जंग न भी हो तब भी इस का लाभ ही है। पुराना राशन भी जो लोगों ने जमा किया था मुख़्तलिफ़ आफ़ात आती रहीं इस में वह इस्तिमाल होता रहा और उन्होंने यही कहा कि हमें लाभ हुआ।

यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला उनकी रिहाई के जल्द सामान पैदा फ़रमाए और वह जो यमनी फ़ौजों को या जो एक ग्रुप है इस को यह शक है कि जमात अहमदिया देश के ख़िलाफ़ साज़िशें करने वाली है उनके शकूक दूर हों और उनकी रिहाई जल्दी हो।

अल्लाह तआला दुनिया को यह भी अक़ल दे कि वह तरक़्क़ी के नाम पर दुनिया की ग़लाज़तों में पड़ने की बजाय अल्लाह तआला की पहचान करें। मुस्लमान मुल्कों को भी अल्लाह तआला इन्साफ़ पर क़ायम कर के एक होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम अल्लाह तआला के पैग़ाम को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने वाले हों।

एक अफ़सोसनाक सूचना भी है श्रीमान ताहिर इक़बाल चीमा साहिब इब्ने ख़िज़र हयात चीमा साहिब सदर जमात अहमदिया चक 84 फ़तह ज़िला बहावलपुर को पिछले दिनों शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

ताहिर इक़बाल चीमा साहिब की शहादत का वाक़िया यूं है कि दो अज्ञात लोगों ने 4 मार्च को फायरिंग करके शहीद कर दिया। ब-वक़्त शहादत मरहूम की उम्र साठ साल थी। मज़ीद तफ़सीलात इस तरह हैं कि ताहिर इक़बाल चीमा साहिब सदर जमात चक84 फ़तह ज़िला बहावलपुर नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के बाद हसब-ए-मामूल सैर के लिए रवाना हुए। दो अज्ञात मोटरसाईकल सवारों ने पीछा कर के फायरिंग कर दी। आपके सिर में दो गोलियां लगीं जिसके नतीजा में आप अवसर पर ही शहीद हो गए। वक़ूआ के बाद हमला-आवर अवसर से फ़रार हो गए। पुलिस ने नामालूम अफ़राद के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दर्ज कर लिया है लेकिन वहां उस के बारे में तहक़ीक़ तो होती कुछ नहीं। बहरहाल मुक़द्दमा दर्ज हुआ है। शहीद मरहूम की किसी के साथ कोई दुश्मनी या ज़ाती रंजिश नहीं थी। अपने गांव और इर्द-गिर्द के दिहात में भी यह नेक-नामी के हामिल और बड़े शरीफ़ुल नफ़्स मशहूर थे। सिवाए मज़हबी अंसर के उनकी शहादत की और कोई वजह नज़र नहीं आती।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पड़दादा श्रीमान महीन ख़ान साहब के भाई हज़रत हुक्म दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया से हुआ जिन्हों ने 1905 ई. में चक 46 शुमाली सरगोधा से कादियान जा कर बैअत की थी और कादियान में ही क़ियाम पज़ीर हो गए। इस के बाद उन्होंने अपने भाईयों और ख़ानदान के दीगर अफ़राद को बैअत कर के अहमदियत में शमूलियत इख़्तेयार करने की तहरीक की जिसकी वजह से शहीद मरहूम के पड़दादा महीन ख़ान साहब ने सब भाईयों समेत बज़रीया ख़त बैअत कर के अहमदियत में शमूलियत इख़्तेयार की। बाद में यह ख़ानदान चक 84 बहावलपुर मुंतक़िल हो गया। शहीद मरहूम 64 ई. में चक 84 बहावलपुर में पैदा हुए। वहीं मैट्रिक तक तालीम हासिल की। ज़मेंदारे के पेशे से मुंसलिक हो गए। ख़ुदा के फ़ज़ल से वसीयत के निज़ाम में

शामिल थे। शहादत के समय बहैसियत सदर जमात ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। इस से पहले बहैसियत सैक्रेटरी माल और ज़ईम अंसारुल्लाह भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ उनको मिलती रही। चंदाजात की अदायगी में बाक़ायदा, नमाज़ क़ुरआन के इलावा नमाज़-ए-तहज्जुद की अदायगी का बहुत ख़्याल रखते। सफ़र के दौरान भी नमाज़ की अदायगी का विशेष इंतेज़ाम करते। ख़िलाफ़त से इशक़ था। मेरे ख़ुत्बात बाक़ायदगी से सुनते और जायज़ा लेते कि क्या घर के सब अफ़राद ने ख़ुतबा सुन लिया है। शहादत के समय समस्त लाज़िमी चंदाजात और हिस्सा जायदाद का हिसाब मुकम्मल था। जमाती मेहमानान का विशेष ख़्याल रखते और कोशिश करते कि उनकी मेहमान-नवाज़ी अपने घर में की जाए। जमाती तौर पर न हो बल्कि ज़ाती तौर पर हो। वहां के क़ब्रिस्तान का भी मरहूम ने इंतेज़ाम किया। पाकिस्तान में क़ब्रों का भी और क़ब्रिस्तान का भी बड़ा मसला रहता है। आए दिन कोई न कोई शरीर इन्सान या ग्रुप हमारी क़ब्रों के कतबे तोड़ जाते हैं। उन्होंने अपने क़ब्रिस्तान का भी इंतेज़ाम किया। क़ब्रों का जायज़ा भी लेते रहते थे। उनको maintain भी रखते थे। यह भी आजकल वहां काफ़ी काम है। गांव के अक्सर लोग अपनी अमानतें उनके पास रखवाते थे जिनमें ग़ैरअज़ जमात भी शामिल थे। अगर एतबार था तो केवल अहमदी पर कि यही हमारी अमानतों को सही तरह रख सकता है और साथ दुश्मनी भी। इन लोगों का यह भी अजीब तरीक़ है। लेकिन बहरहाल जो अमानतें रखवाते थे वह शरीफ़ुल नफ़्स लोग ही हैं लेकिन दूसरों को फिर भी समझ नहीं आती।

उनकी पत्नी किशवर नाहीद साहिबा कहती हैं कि मेरे पति मरहूम का रवैय्या मेरे साथ निहायत मुशफ़िक़ाना रहा। घर में नमाज़ की अदायगी और ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुत्बात के सुनने का जायज़ा लेते। मेरे अज़ीज़ों से हमेशा अपनाईयत का और दोस्ताना संबंध का सुलूक रखते।

शहीद मरहूम की बेटी मदीहा ताहिर कहती हैं कि जमाती ख़िदमत में पेश-पेश रहते। इताअत का वस्फ़ नुमायां था। ख़िलाफ़त से बेहद एहतेराम और अक़ीदत का संबंध था। निडर और बहादुर अहमदी थे। बच्चों से हमेशा दोस्ताना संबंध रखा।

अमीर साहिब ज़िला बहावलपुर, मुरब्बी ज़िला बहावलपुर और अन्य ओहदेदारान ने भी शहीद मरहूम की बड़ी तारीफ़ की है। बड़ी हरदिलअज़ीज़ शख़्सियत के मालिक थे। ख़िदमत-ए-ख़लक़ के जज़्बे से सरशार थे। मेहमान-नवाज़ी नुमायां वस्फ़ था। मर्कज़ी नुमाइंदगान और वाक़फ़ीन-ए-ज़िंदगी से अपनाईयत का संबंध रखते थे।

शहीद मरहूम ने पीछे रहने वालों में पत्नी मुहतरमा के इलावा दो बेटे और एक बेटी यादगार छोड़े हैं। उनके एक बेटे लुक़्मान अहमद अपनी फ़ैमिली के साथ जर्मनी में हैं। बेटी मदीहा ताहिर यहां यू.के में रहती हैं। एक बेटे सलमान ताहिर उनके साथ ही वहां ज़मींदारा करते थे। अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और सब पीछे रहने वालों में को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। नमाज़ के बाद इन शा अल्लाह उनकी नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

उनका न दीन है न दुनिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक अवसर पर उसका बड़ा सख़्त इंज़ार फ़रमाया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसके दिल में थोड़ा भर भी घमंड होगा अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल नहीं होने देगा। एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि इन्सान चाहता है कि अच्छा कपड़ा पहने, अच्छी जूती पहने, ख़ूबसूरत लगे तो यह किस के अंतर्गत आएगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह घमंड नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला तो ख़ुद सुंदर है। ख़ूबसूरत है और ख़ूबसूरती को पसंद फ़रमाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया घमंड यह है कि इन्सान हक़ का इंकार करे। लोगों को ज़लील समझे। उन्हें अपमान की दृष्टि से देखे और उनसे बुरी तरह से पेश आए। अतः ईद वाले दिन अच्छे कपड़े पहनना, तैयार होना, ख़ुशबू लगाना ये सब चीज़ें अल्लाह तआला को पसंद हैं लेकिन उनको फ़ख़र और घमंड का मार्ग बनाना यह अल्लाह तआला को पसंद नहीं है।

इस आयत में इन बातों की ओर तवज्जा दिला कर फिर आख़िर में कहा है कि अल्लाह तआला हर घमंड करने वाले और शेख़ी करने वाले को पसंद नहीं फ़रमाता। इन बातों में अल्लाह तआला का भी हक़ है और बंदों का हक़ भी है। अल्लाह तआला का हक़ है कि उसकी इबादत की जाए। अब यह बेशक अल्लाह तआला का हक़ है कि उसकी इबादत की जाए और किसी चीज़ को उसके समान न ठहराया जाए लेकिन इस का लाभ बंदे को है। लोग पूछते हैं अल्लाह तआला को इस का क्या लाभ है? अल्लाह तआला को इस का कोई लाभ नहीं है। अल्लाह तआला ने एक जगह फ़रमाया है कि इन्सान के जन्म का उद्देश्य इबादत है तो यह इसलिए नहीं कि अल्लाह तआला को इसका कोई लाभ है। अल्लाह तआला ने तो हमारी बेहतरी के लिए, हमें नवाज़ने के लिए, हमारी इस्लाह के लिए इबादतों की तरफ़ हमें तवज्जा दिलाई है। हमें बुराईयों से रोकने के लिए इबादत का हुक्म है, नमाज़ों का हुक्म है। एक जगह फ़रमाया إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (सूरः अल् अंकबूत : 46) निसन्देह नमाज़ बे-हयाई और हर नापसंदीदा बात से रोकती है और अल्लाह का वर्णन निसन्देह सब वर्णनों से बड़ा है।

अतः नमाज़ों का, इबादतों का, अल्लाह तआला के वर्णन का, अल्लाह तआला को याद करने का लाभ हमें है और अल्लाह तआला हमें उसका बदला देता है, प्रति-फल देता है। इसलिए एक रिवायत में है कि एक आदमी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया : हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे कोई ऐसा अमल बताएं जो मुझे जन्नत में ले जाए और आग से दूर कर दे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला की इबादत कर। इसके साथ किसी को शरीक न ठहरा। नमाज़ पढ़। ज़कात दे और सिला रहमी कर। अर्थात रिश्तेदारों से प्यार और मुहब्बत का सुलूक करो। अतः देखें किस तरह अल्लाह तआला नवाज़ रहा है। दुनिया में भी नवाज़ रहा है और अगले जहान में भी जन्नत की ख़ुशख़बरी दे रहा है।

फिर एक और रिवायत में आता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो केवल लिल्लाह दो ईदों की रातों में इबादत करेगा उसका दिल हमेशा के लिए ज़िंदा कर दिया जाएगा। कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी है। अल्लाह तआला की ख़ातिर इबादत करने से हमेशा के लिए इनाम मिल रहा है। अतः ईद केवल ख़ुशियां मनाने का नाम नहीं है बल्कि उसकी रातों को इबादतों से ज़िंदा करने का नाम है और इस से हमेशा के लिए फिर रुहानी ज़िंदगी हासिल हो जाती है। वे लोग जो समझते हैं कि रमज़ान ख़त्म हुआ अब आराम से सोएँगे। कहाँ तो सहरी खाने के लिए उठते थे और इस वजह से दो नफ़ल भी पढ़ लेते थे और कहाँ यह कि ईद वाले दिन कुछ बल्कि बहुत से फ़ज्र की नमाज़ में भी जागने की सुस्ती दिखा जाते हैं। बीमारी को कोविड को बहाना नहीं बनाना चाहिए। फ़ज्र की नमाज़ पर मस्जिद में आएं। ईद वाले दिन अगर कम हाज़िरी थी तो जहां आज ईद है उनको कल भी इस बात का ख़्याल रखना चाहिए और जहां कल ईद होनी है वह कल इस कमी को पूरा करें कि नमाज़ पर हाज़िरी हो या कम से कम घरों में बच्चों के साथ सुबह उठकर वक़्त पर नमाज़ बाजमाअत अदा करें। जहां तक संभव है बाजमाअत नमाज़ों का एहतेमाम करें। विशेष एहतेमाम से सँवार कर जैसा कि पिछले ख़ुत्बा जुमा में भी मैं ने कहा था कि सँवार कर नमाज़ों की अदायगी करें। रमज़ान ख़त्म होने और आज ईद मनाने को हमें अपनी इबादतों से रुख़स्त या कमी या पूरा एहतेमाम न करने का इजाज़तनामा नहीं समझ लेना चाहिए। यह इबादतें ही हैं जो हमारी दुनयावी और आख़िरी ज़िंदगी में अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस बनाने की ज़मानत बनेंगी। (कादियान)

(ख़ुत्बा ईदुल फित्र हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़र्मूदा 2 मई 2022 ई. से उद्धृत)

★ ★ ★

वसीयत में सच्चाई , वसीयत करने से ज़्यादा ज़रूरी है

चंदा जितना दे सकते हैं उतना ही दें लेकिन अपनी आमद कम न लिखवाएं, कह दें कि हमारी जो भी आमद है हम उसके अनुसार चंदा नहीं दे सकते

हमें कम शरह से चंदा देने की आज्ञा दी जाए, इजाज़त ले लें, में इजाज़त दे दिया करता हूँ प्रत्येक को

लोगों को सच्चाई पर क़ायम करें, ज़बरदस्ती न करें, जिनकी मजबूरियाँ हैं उनकी मजबूरी को हम मान लेते हैं

सब्र और हौसला की कमी के माध्यम से ज़रा सी बात इंतेहा पर पहुंच जाती है, मर्दों को भी नरमी और प्यार का व्यवहार करना चाहिए , औरतों में भी बर्दाश्त पैदा होनी चाहिए

नमाज़ की अदायगी प्रत्येक मुस्लमान की बुनियादी ज़िम्मेदारी और लाज़िमी भाग है, जुमला अराकीन-ए-मज्लिस-ए-आमला को इस हवाला से अमली उदाहरण होना चाहिए

मैंबरान मज्लिस-ए-आमला को समय की क़ुर्बानी और वक़्फ़-ए-आरिज़ी के हवाला से भी मिसाली उदाहरण क़ायम करना चाहिए

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल आमिला जमाअत अहमदिया फिनलैंड की ऑनलाइन मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर की कीमती उपदेश

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 7 नवंबर 2021 ई. को नैशनल आमिला जमाअत अहमदिया फिनलैंड के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात फ़रमाई। हुज़ूर अनवर इस मुलाक़ात के लिए इस्लामाबाद (टलफ़ोरड) में क़ायम एम.टी.ए स्टूडीयोज़ में रौनक अफ़रोज़ हुए जबकि मैंबरान मज्लिस-ए-आमला ने अहम-दिया मुस्लिम जमाअत के मिशन हाऊस वाक़्य Helsinki फिनलैंड से ऑनला-इन शिरकत की

मुलाक़ात का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ, जिसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जुमला उपस्थित लोगों से बात चीत फ़रमाई और समस्त शामिल होने वालों को हुज़ूर अनवर से विभिन्न उमूर की विषय में राहनुमाई और हिदायात हासिल करने की तौफीक मिली।

हुज़ूर अनवर ने मैंबरान मज्लिस-ए-आमला को इस तरफ़ तवज्जा दिलाई कि नमाज़ की अदायगी प्रत्येक मुस्लमान की बुनियादी ज़िम्मेदारी और अनिवार्य अंग है तथा यह कि जुमला मैंबर मज्लिस-ए-आमला को इस हवाले से अमली उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए

हुज़ूर अनवर ने मज़ीद फ़रमाया कि मैंबरान मज्लिस-ए-आमला को समय की क़ुर्बानी और वक़्फ़-ए-आरिज़ी के हवाला से भी मिसाली उदाहरण क़ायम करना चाहिए जहां वह दीन की ख़िदमत के लिए समय की क़ुर्बानी करते हैं।

सैक्रेटरी साहिब माल ने अपना परिचय करवाया तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अच्छा मा शा अल्लाह। वसाया में लोग अपनी हिस्सा आमद का फ़ार्म सही पुर करते हैं।

(सैक्रेटरी साहिब माल ने अर्ज़ किया कि) हुज़ूर इस में कुछ कनफ़यूज़न (confusion) है। कुछ लोग ऐसे हैं जिनका चंदा लगता है कि इस से ज़्यादा होना चाहिए, बजट सही नहीं है उन्हें इस तरफ़ तवज्जा भी दिलाई जाती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि उन्हें कहें कि यदि वसीयत की है तो सच्च बोल के अपनी आमद पर चंदा अदा करो, नहीं तो यदि मजबूरी है, चंदा सही तरह अदा नहीं कर सकते तो वसीयत को मंसूख़ करा लो फिर बाद में जब हालात बेहतर हो जाऐंगे फिर वसीयत कर लेना। वसीयत में सच्चाई वसीयत करने से ज़्यादा ज़रूरी है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने चंदा आम देने वालों के विषय में दरयाफ़त फ़रमाया। सैक्रेटरी साहिब माल ने अर्ज़ किया हुज़ूर चंदा आम देने वालों में कुछ कमज़ोरी है, इस में से अक्सर non earning मैंबर्ज़ भी हैं तो अक्सर का एतराज़ यह होता है कि हमें तो अलाऊँस ही बहुत थोड़ा सा मिलता है जिसमें ख़र्चा पूरा नहीं होता, तो इस हवाले से थोड़ी कमज़ोरी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ठीक है उनसे कहो फिर आपको अलाऊँस थोड़ा मिलता है तो आप रुख़स्त ले लें। चंदा जितना दे सकते हैं उतना ही दें बेशक लेकिन अपनी आमद कम न लिखवाएं। कह दें हमारी जो भी आमद है हम उसके अनुसार चंदा नहीं दे सकते और हमें कम शरह से चंदा देने की इजाज़त दी जाए। वह इजाज़त ले लें, मैं इजाज़त दे दिया करता हूँ प्रत्येक को।

हुज़ूर अनवर ने मज़ीद फ़रमाया कि लोगों को सच्चाई पर क़ायम करें। ज़बर-दस्ती न करें। कोई टैक्स तो है नहीं यह। जिनकी मजबूरियाँ हैं उनकी मजबूरी को हम मान लेते हैं लेकिन यह है कि फिर वह लिखें कि इन हालात में हमारी आमद के अनुसार चंदा देना हमारे लिए मुश्किल है, हमें छूट दी जाए कि हम उसके अनुसार चंदा इतनी शरह से दें तो लिया करें।

एक मैंबर मज्लिस-ए-आमला ने अर्ज़ की कि बढ़ते हुए इन आलमी मसायल को किस तरह बेहतर किया जा सकता है?

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मेरी एक पुस्तक है आलमी मसायल और उनका हल इस को पढ़ें और इस के इक़तेबास निकाल के घरों में दें। और दूसरे यह कि सब्र और हौसला। मर्दों औरतों में सब्र की कमी है। ज़रा सी बात होती है तो इंतेहा पर पहुंच जाती है। तो मर्दों को भी नरमी और प्यार का व्यवहार करना चाहिए, औरतों में भी बर्दाश्त पैदा होनी चाहिए और इस के लिए विभिन्न वक़्तों में सैक्रे-टरी तर्बीयत का काम है, इस्लाही कमेटी और तर्बीयत के विभिन्न प्रोग्राम बनाते रहें ता कि मर्दों और औरतों दोनों की ट्रेनिंग होती रहे और मुआमले उमूर-ए--आम्मा के पास तो तब आते हैं जब बिगड़ते हैं। इस से पहले पहले यदि अपने सैक्रेटरी तर्बीयत को सक्रिय कर दें ,यदि आपके सैक्रेटरी तर्बीयत अच्छा काम करने वाले हैं तो मसायल आपके पास कम आएँगे और हल हो जाऐंगे।

एक दोस्त ने अर्ज़ की कि यहां स्कूलों में इस्लाम की तालीम भी एक मज़मून के तौर पर सिखाई जाती है लेकिन गर्वनमैंट की तरफ़ से कोई निसाब निर्धारित नहीं है जिसकी वजह से अध्यापक अपनी मर्ज़ी से इस्लाम के ग़लत अक़ायद

मासूम बच्चों को सिखाते हैं जैसा कि क़ुरआन-ए-मजीद में तहरीफ़ हो चुकी है और इस तरह की चीज़ें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नहीं तो यह ग़लत है नाँ। आप एजूकेशन डिपार्टमैंट को लिखें कि ये आप ग़लत पढ़ा रहे हैं, इस्लाम यह नहीं है। एक तो यह कि आप लोगों की जमाअत वहां क़ायम है तो अपना मिनिस्ट्री आफ़ एजूकेशन में, एजूकेशन डिपार्टमैंट में इतना असर-ओ-रसूख़ हो जाना चाहिए अब तक कि आप उनको लिख कर कहें और अख़बारों में भी लिखें कि बच्चों को जो पढ़ाया जा रहा है यह ग़लत तरीक़े से पढ़ाया जा रहा है और असल इस्लाम की तारीफ़ यह है और यह साबित शूदा है कि क़ुरआन-ए-करीम intact है, अपनी असली हालत में और अब तो बहुत सारे उनके अपने लोगों की गवाहियाँ पेश हैं। बर्मिंघम में भी उनके हाँ एक exhibition हुआ था वहां उन्होंने साबित किया, दिखाया, और जगहों पर आर्टीकल भी आ चुके हैं, ग़ैरों के भी आ चुके हैं और साबित कर सकते हैं और यह क़ुरआन-ए-करीम का अपना दावा भी है तो इसके लिए आप लोगों को कोशिश करनी चाहिए। यदि यह करते हैं तो क्यों करते हैं? अब जर्मनी में उन्होंने कोशिश की है तो वहां उन्होंने फिर कहा अच्छा फिर स्कूलों में पढ़ाने के लिए हमने सिलेबस बनाना है, बताओ। विभिन्न फ़िर्क़ों ने अपने अपने सिलेबस भेजे लेकिन जमाअत अहमदिया नए स्कूल के लिए इस्लाम की बुनियादी तालीम का जो सिलेबस भेजा था इस को उन्होंने accept कर लिया और वही पढ़ाया जाता है। मैंने यह कहा था कि कोई अख़तेलाफ़ी मसला नहीं छेड़ना, हमने इस्लाम की बुनियादी तालीम, बुनियादी अक़ायद, अरकान-ए-इस्लाम, अरकान-ए--ईमान, कुरान-ए-करीम, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मुक़ाम यह चीज़ें और प्रसिद्ध हदीसें, इस किस्म की बातें और जो authentic तारीख़ है वह। ये चीज़ें दी जाएं और इसको उन्होंने accept कर लिया जहां किसी फ़िरक़े का कोई वर्णन न हो और वह प्रत्येक को मंज़ूर है और इसके बाद क़बूल हो गया तो इसी तरह आप लोग भी कोशिश करें। क्यों नहीं वहां कोशिश करते? और पहली बात तो यह है कि अख़बारों में लिखें और बार-बार विभिन्न अहमदियों की तरफ़ से लिखा जाए कि इस तरह पढ़ाया जा रहा है ये तो आप लोगों को ग़लत तालीम दे रहे हैं। हम मुस्लमान हैं, हमें पता है कि क्या इस्लाम है। हमारे से तो नहीं पूछा जाता आप किस तरह बैठ के ये बना रहे हैं। तो इस तरह कोशिश करनी पड़ेगी, उसके लिए पूरी तरह चिल्लाए।

इन दोस्त ने अर्ज़ की जी हुज़ूर। इस सिल्सिला में एजूकेशन डिपार्टमैंट से संपर्क किया है। अब इंशाअल्लाह अख़बारों में भी लिखेंगे

हुज़ूर अनवरने फ़रमाया कि हाँ अख़बारों में लिखें, बार-बार लिखें। यहां कोई शोर मचाओ प्रोटैस्ट करने की और शोर सुनने की उनको आदत है, जब शोर मचाएँगे, लिखेंगे, बच्चों की तरफ़ से भी जाएगा, माँ बाप की तरफ़ से जाएगा, बेशुमार ख़त आएँगे, जितना भी उनका मीडीया है इस में लिखें तो एजूकेशन डिपार्टमैंट वाले आप ही प्रैशराइज़ड हो जाऐंगे।

एक दोस्त ने अर्ज़ की कि हुज़ूर तब्लीग़ी हवाले से एक प्रश्न था कि विभिन्न प्रोग्रामज़ के माध्यम से जब तब्लीग़ी राबते बनते हैं तो लोगों की तबीयत में कम बोलने की वजह से वे राबते क़ायम रखने में मुश्किल होती है तो इस से विषय में हुज़ूर की क्या राहनुमाई है? किस तरह राबते क़ायम रखे जाएं?

हुज़ूर अनवर ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि कौन कम बोलने वाले है, सुनने वाला या बोलने वाला?(उन्होंने अर्ज़ किया कि) हुज़ूर जो फिनिश अवाम है उनकी तबीयत में काफ़ी shyness है, ये जल्दी ओपन नहीं होते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ठीक है तो फिर ज़ाती राबते बनाएँ, दोसतियाँ बनाएँ, संबंध रखें। अपने हमसाइयों से संबंध रखें, हमसाइयों को पता लगे। विभिन्न सैमीनार करें आप उनको इस में बुलाऐं। छोटे मोटे पैमाने पर सैमीनार करें, महीने में, दो महीने में, तीन महीने में एक सैमीनार हो जाए। एंटर फ़ेथ प्रोग्राम हो जाएगी, कोई इस तरह की चीज़ हो जाए इस में बुलाऐं और वहां ये आपकी बातें सुनें। जब सुनेंगे तो ख़ुद ही प्रश्न करेंगे। आहिस्ता-आहिस्ता introduction होगी, फिर अख़बारों में ख़त लिखें कि इस्लाम क्या चीज़ है, इस्लाम की तालीम क्या चीज़ है, अमन क्या चीज़ है, अमन संसार में किस तरह क़ायम हो सकता है, इस्लाम का क्या नज़रिया है अमन के बारे में और मौजूदा contemporary issues के ऊपर असल राय क्या होनी चाहिए, एक मुस्लमान की हैसियत से हमारी क्या राय है वह लिखें तो फिर उनको तवज्जा पैदा होगी कि हाँ ये लोग केवल पुरानी दक़यानूसी बातें नहीं करते, केवल मज़हब मज़हब की बात कर के हमें वरग़ला नहीं रहे बल्कि ये contemporary issues के ऊपर भी बात कर के हमें गाईड कर सकते हैं। फिर वे आहिस्ता-आहिस्ता खुलेंगे तो वाक़फ़ीयत पैदा हो जाएगी इन शा अल्लाह।

फ़रमाया कि फिनिश लोग जिनकी आपके साथ दोसतियाँ हैं यदि किसी की ज़ाती दोस्ती है, मैं जानता हूँ बाज़ों को जिनकी ज़ाती दोसतियाँ हैं उनके साथ तो वे बड़े खुल के बातें करते हैं। तो ज़ाती संबंध बनाने की बात भी है। लेकिन ज़ाती संबंधात बनाने के इलावा इस्लाम के बारे में आपको एक और पिक्चर (overall picture) देनी पड़ेगी और वह सोशल मीडीया और अख़बार और विभिन्न तरीक़ों से देने की कोशिश करनी चाहिए और फिर gathering सैमीनार में इस तरह की बातें करें।

एक और दोस्त ने प्रश्न किया कि प्यारे हुज़ूर लोगों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब पढ़ने का शौक़ कैसे पैदा किया जाए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि कैसे पैदा किया जाए? विभिन्न topics के ऊपर छोटे छोटे इक़तेबास बना के, उनको टाइप कर के, प्रिंट निकाल के लोगों को दें। एक पुस्तक को लगातार पढ़ना लोगों के लिए जिनको पढ़ने का शौक़ ही नहीं मुश्किल है। तो वह इक़तेबासात आप देंगे तो इस टॉपिक (topic) के ऊपर कुछ न कुछ तवज्जा पैदा होगी। इंग्लिश में, उर्दू में टाइप कर के घरों को दिया करें। किताबें नहीं तो कम से कम इक़तेबासात ही पढ़ना शुरू कर देंगे। अल्फ़ज़ल में इक़तेबासात आते हैं जो रोज़नामा अल्फ़ज़ल में और जो इंटरनैशनल अल्फ़ज़ल है इस में पहले सफ़ा पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इक़तेबासात आते हैं वही निकाल के दे दिया करें लोगों को तो कुछ न कुछ तो कम से कम पता लग जाएगा नाँ। बाक़ी आजकल रुजहान ही नहीं पढ़ने का। आजकल तो रुजहान यह है कि सोशल मीडीया पर देख लो, सन लो, तीस सैकिण्ड के अंदर अंदर जो बात कान में पड़ जाए वह देख लो। या टी.वी पर बैठ के प्रोग्राम देख लो। इस की तरफ़ रुजहान ज़्यादा हो गया है और या फिर आडीयो बुक्स बनाएँ। वे बना के दीं ट्रैवल (travel) करते हुए, टैक्सी चलाते हुए, इधर उधर जाते हुए कानों पर लगा लें, वे सुन लें। वे भी दिलचस्पी का सामान हो जाता है। पढ़ने का रिवाज वैसे ही कम हो गया है उमूमन। इसलिए एक तो विभिन्न टॉपिक्स के छोटे-छोटे इक़तेबासात ले, आजकल के जो टॉपिक्स हैं contemporary नमाज़ों की आवश्यकता, ख़ुदा की वहदानियत। अल्लाह तआला के व्यक्तित्व existance of Allah की आवश्यकता है कि नहीं है, और ये सब बहुत सारे टॉपिक्स ऐसे हैं तो उनके ऊपर इक़तेबास निकाल के, प्रिंट करके लोगों को भेजें। फिर आडीयो बना के भेजें तो इस तरह लोगों को कम से कम कुछ न कुछ तो आवाज़ कान में पड़ेगी नाँ। किताबें पढ़ने का अब रिवाज नहीं रहा। किताबें सुनने का रिवाज है। आडीयो बक्स बना दें। इसलिए अल-इस्लाम ने भी बहुत सारी आडीयो बुक्स बनाई हुई हैं उनको भी देखें। डाउन लोड कर के सुन सकते हैं या रिकार्ड कर के लोगों को दे सकते हैं। ठीक है नाँ! आप लोगों को वर्णन करने से पहले अपने घरों में वर्णन करें। पहले तो बच्चों के साथ इतनी दोस्ती रखें कि बच्चे जब स्कूल से आएं तो बताएं कि आज स्कूल में इस बारे में हमें क्या पढ़ाया और फिर आप उस को बताएं कि तुम्हारी उम्र क्या है और कुछ बातें जो तुम्हें अब बताई जा रही हैं तुम्हें तो इस की समझ भी नहीं है, तुम्हें समझ भी नहीं आ सकती कि क्या चीज़ है और क्या चीज़ नहीं है। जब तुम बालिग़ होगे तुम्हें समझ आएगी । फिर तुम दुबारा प्रश्न पूछना फिर तुम्हें समझाया जाएगा और फिर जो प्रश्न तुम्हारे ज़हन में उठें उनके उत्तर भी तुम्हें मिल जाऐंगे। फिर मज़हब इसके बारे में क्या कहता है इन बच्चों के लेवल पर रुक कर, पाँच वर्ष का बच्चा, आठ वर्ष का बच्चा, दस वर्ष का बच्चा, बारा वर्ष का बच्चा, पंद्रह वर्ष का बच्चा और उनसे बे-तकल्लुफ़ हो के फिर उनसे बातें करनी पड़ेंगी, नहीं तो दूसरों की इस्लाह करते करते आप अपने बच्चों को ज़ाए न कर दें। असल फ़िक्र यह होंइ चाहिए।

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 19 नवंबर 2021)

★ ★ ★

यह चीज़ अच्छी तरह ज़हनों में डालें कि दुआ के बग़ैर काम में बरकत नहीं पड़ सकती

एक आम मुस्लमान को सौ फ़ीसद नमाज़ पढ़ने वाला होना चाहिए सिवाए यह कि आमिला के मैंबरान कह दें कि जी हमने इतने प्रसंट पढ़ी

नौ-मुबाईन जो पहले मुस्लमान नहीं थे उन्हें सूरः फ़ातेहा अरबी में और इस का अनुवाद सिखाना चाहिए और उन्हें नमाज़ पढ़नी भी सिखानी चाहिए

ऐसे लोग तलाश करें जो वाक़ई दीन की ख़िदमत का भावना रखने वाले हों, सिर्फ़ बातें करने वाले न हों

अपनी एक्टी वटीज़ को ताज़ा रखें जो ख़ुद्दामुल अहमदिया में करते आए हैं, उनको अंसारुल्लाह में भी जारी रखें, उनकी टीमें बनाएँ उनसे खिलवाएं

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल आमिला मज्लिस अंसारुल्लाह कैनेडा की ऑनलाइन मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर के कीमती उपदेश

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 6 नवंबर 2021 ई. को नैशनल आमिला मज्लिस अंसारुल्लाह कैनेडा के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात फ़रमाई। हुज़ूर अनवर इस मुलाक़ात के लिए इस्लामाबाद (टिलफ़ोरड) में क़ायम एम.टी.ए स्टूडीयोज़ में रौनक अफ़रोज़ हुए जबकि मैंबरान मज्लिस-ए-आमला ने ऐवान ताहिर, पीस विलेज कैनेडा से ऑनलाइन शिरकत की

इस मुलाक़ात का आरंभ तिलावत-ए-क़ुरआन-ए-करीम से हुआ, जिसके बाद हुज़ूर अनवर ने जुमला हाज़ेरीन से बात चीत फ़रमा, उन्हें उनकी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाई और उनके विभाग के हवाला से उनकी राहनुमाई फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर ने मैंबरान मज्लिस-ए-आमला को इस तरफ़ तवज्जा दिलाई कि क़बल उसके कि वे दूसरों से तवक़्क़ो करें उन्हें अपने मिसाली नमूने के माध्यम मज्लिस अंसारुल्लाह के जुमला प्रोग्रामों में शमूलियत इख़तेयार करनी चाहिए, हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यदि प्रत्येक सतह पर मैंबरान मज्लिस-ए-आमला इन प्रोग्रामज़ में शमूलियत इख़तेयार करें तो शामिल होने वालों की संख्या में अच्छा-ख़ासा इज़ाफ़ा हो सकता है और अन्य मैंबरान भी नतीजन ज़्यादा सक्रिय हो जाएंगे।

हर सतह के मैंबरान मज्लिस-ए-आमला को पांचों समय नमाज़ बाजमाअत अदा करने के हवाला से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि दुआ के बग़ैर तो काम में बरकत नहीं पड़ सकती। यदि उनका ख़्याल है कि उनकी अपनी लियाक़त की वजह से, उनके अपने इलम की वजह से, उनकी अपनी मेहनत की वजह से काम में कोई बरकत पड़ जाएगी तो वह नहीं पड़ सकती जब तक दुआ साथ न हो। इसलिए ये चीज़ें अच्छी तरह ज़हनों में डालें। क़ायद साहिब तर्बीयत ने अर्ज़ किया कि जी हुज़ूर हम मुंतज़ेमीन के साथ भी और रीजनल नाज़िम के साथ भी रैगूलर मीटिंगज़ करते रहें हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मीटिंगज़ का कोई लाभ नहीं जब तक नतीजा सामने नहीं आता। सो फ़ीसद नमाज़। नमाज़ तो सो फ़ीसद होनी चाहिए। एक आम मुस्लमान आदमी को सो फ़ीसद नमाज़ पढ़ने वाला होना चाहिए सिवाए यह कि आमिला के मैंबरान कह दें कि जी हमने इतने फ़ीसद पढ़ी तो वह बड़ा अच्छा रिज़ल्ट हो गया। यह तो अच्छा रिज़ल्ट नहीं है। जब आप लोग एक दफ़ा यहां आए थे तो यहां यूके का इजतेमा हो रहा था। उस समय मैंने उस इजतेमा पर जो मेरा अंतिम भाषण था, मेरा ख़्याल है इस समय भी आप लोगों को यह तवज्जा दिलाई थी कि नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा दें। याद है? क़ायद साहिब तर्बीयत ने अर्ज़ की कि हुज़ूर 2015 ई. में। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : उस तक़रीर को पुनः सुन लें।

क़ायद तर्बीयत नौ मुबाईन से बात चीत फ़रमाते हुए जो नौ-मुबाईन की अख़लाक़ी तर्बीयत के ज़िम्मेदार हैं, हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ऐसे नौ मुबाईन जो पहले मुस्लमान नहीं थे उन्हें सूरत फ़ातिहा अरबी में और इस का अनुवाद सिखाना चाहिए और उन्हें नमाज़ पढ़नी भी सिखानी चाहिए।

क़ायद तब्लीग़ से बात चीत फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि उनके टार्गेट्स बहुत बुलंद होने चाहिए, केवल तब ही वे अपने उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं।

एक मैंबर मज्लिस अंसारुल्लाह ने प्रश्न किया कि कुछ दोस्तों को जब कोई ज़िम्मेदारी देने की कोशिश करते हैं तो वे आगे से क्षमा कर लेते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप ज़िम्मेदारी देने की कोशिश करते हैं वे माज़रत करने की कोशिश करते हैं। अब यही तो आपके लिए चैलेंज है कि किस की कोशिश सफल होती है। बात यह है कि पहले देखा करें कि इन्सान कोई ज़िम्मेदारी उठाने वाला है भी कि नहीं। लोगों की कमी तो कोई नहीं पड़ी हुई। वहां लोगों की कमी तो कोई नहीं है। कैनेडा में लोग तलाश करें। कुछ लोग, आप समझते हैं कि बातें करने वाले बड़े हैं तो उनको ज़िम्मेदारी दो। कुछ लोग होते हैं केवल बातें करने वाले। दूसरों के काम पर तन्क़ीद करने वाले और मश्वरे देने वाले कि उस को इस तरह होना चाहिए और उस को इस तरह होना चाहिए। जब आप उनको कहें कि अच्छा आओ भई सामने आओ, तुम काम करो। तो कहते हैं नहीं नहीं नहीं मेरे पास समय नहीं है। इन लोगों की आदत होती है। केवल उन्होंने बातें करनी हैं। इसलिए आप लोगों को परेशान होने की आवश्यकता कोई नहीं। हाँ नए-नए लोग तलाश करें, नए आने वाले तलाश करें। अब यहां भी मैंने देखा है कुछ अंसार आप ने सफ़-ए-दोम के लिए हुए हैं। यदि बड़ी उम्र के नहीं आते तो सफ़ दोम के अंसार को कहें कि वे आगे आएं, उनसे काम लें। आपकी सैकिण्ड लाईन भी तैयार हो जाएगी और उनकी ट्रेनिंग भी हो जाएगी। इसी तरह आपने जो ऐडीशनल लगाए हुए हैं उनके साथ बहुत सारे नायबीन भी लगाए जा सकते हैं। तो इस तरह भी तर्बीयत हो जाएगी। तो आइन्दा आपको काम करने वाले लोग मिल जाऐंगे। तो ज़बरदस्ती तो आप किसी से काम नहीं ले सकते। और मयार क्या है आपका, क्यों आप उनको ज़बरदस्ती देने की कोशिश करते हैं? जिसकी ख़ाहिश ही नहीं कि दीनी ख़िदमत करे उस से ज़बरदस्ती आप ख़िदमत नहीं ले सकते इसलिए ऐसे लोग तलाश करें जो वाक़ई दीन की ख़िदमत की भावना रखने वाले हों, सिर्फ़ बातें करने वाले न हों। आप लोग बातों से प्रभावित हो जाते हैं, बातों से प्रभावित न हुआ करें लोगों का, प्रत्येक व्यक्ति का पहले अच्छी तरह गहराई में जा के ग़ौर से अध्यन किया करें और फिर देखें कि हाँ इस से किस किस्म का काम लिया जा सकता है और फिर काम लेने की कोशिश करें।

क़ायद साहिब सेहत जस्मानी ने प्रश्न किया कि थोड़ा सा एक चैलेंज है कि जो ख़ुद्दामुल अहमदिया से सफ़-ए-दोम में नए अंसार आते हैं उनकी तरफ़ से काफ़ी push होती है कि हमें स्पोर्टस टीम में जैसे कि ख़ुद्दामुल अहमदिया में वे खेलते आ रहे हैं उन के लिए इस तरह की कोई सहूलत मुहय्या की जाए। इस सिल्सिला में हुज़ूर आपकी कोई राय हो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इंतेज़ाम होना चाहिए। इसलिए कि प्रश्न यह है कि जब वे आते हैं और खेलना चाहते हैं और उनकी ख़ाहिश है तो अंसारुल्लाह का काम है उनको ग्रांऊड मुहय्या करें जिस तरह ख़ुद्दामुल अहमदिया करती है इंतेज़ाम। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यही तो फ़रमाया था कि मुझे समझ नहीं आती। एक व्यक्ति जब तक ख़ादिम होता है बड़ा अच्छा एक्टिव होता है, काम कर रहा होता है और जूंही वह चालीस वर्ष का होता है, अंसारुल्लाह में दाख़िल होता है तो इस में सुस्ती पैदा होनी शुरू हो जाती है। इसलिए यदि वह चाहे भी कि मेरे में सुस्ती पैदा न हो तो अंसारुल्लाह के जो बुड्ढे बैठे हुए हैं वे उस को सुस्त करने में बड़ा किरदार अदा करने लग जाते हैं। अब 48 की कोई उम्र तो नहीं है कि आप कह दें मेरा खेलने को दिल नहीं चाहता। लोग पचपन पचपन, साठ साठ वर्ष तक कुछ न कुछ खेलते रहते हैं कोई न कोई गेम, soccer फूटबाल न खेलें तो बैडमिंटन खेल लें। वह नहीं तो सायकलिंग करलीं। वाक कर लें,जॉगिंग करें। सफ़-ए-दोम इसलिए बनाई गई थी। उनकी टीमें बनाएँ, उनके फूटबाल की टीमें बनाएँ उनकी दूसरी खेलों की टीमें बनाएँ, उनसे

खिलवाएँ, उनके लिए एकटिविटीज़ का सामान मुहय्या करें। तो यह तो सदर साहिब सफ़-ए-दोम का भी काम है नाँ, मौलाना साहिब आप भी अपनी हिम्मत करें और मुहय्या करें उनको। इन के लिए सहूलतें मुहय्या करना यह आप लोगों का काम है ताकि वे खेलें क्योंकि सुस्त बनाते हैं आप लोग। तो अभी तो आप लोग जवान हैं इतनी जल्दी आप लोगों ने यह सोच लिया कि हम चालीस वर्ष के हो गए हैं, हम बूढ़े हो गए। इसलिए सफ़-ए-दोम बनाई गई थी कि आप बूढ़े नहीं हुए। पचपन साठ वर्ष तक तो आप बूढ़े कोई नहीं। पचपन वर्ष के बाद सोचा जाएगा कि हाँ बूढ़े हुए भी हैं कि नहीं। तो जवानों के जवान बनना है तो इस तरह बने कि अपनी एकटिविटीज़ को ताज़ा रखें जो ख़ुद्दामुल अहमदिया में करते आए हैं, उनको अंसारुल्लाह में भी जारी रखें।

क़ायद साहिब सेहत जिस्मानी ने अर्ज़ की : हुज़ूर इन शा अल्लाह। साईकल सफ़र हम करते हैं।

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 23 नवंबर 2021)

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 11 April 2024 Issue No. 15

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सालाना इज्तेम ज़ैली तनज़ीम क़ादियान 2024

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सालाना इज्तेम मज्लिस खुद्दमुल् अहमदिया, मज्लिस आँसारूल्लाह, और लज्ना ईमाइल्लाह के सालाना इज्तेम के लिए तिथि 25,26,27 अक्टूबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक इज्तेमा में शामिल होने हर संभव कोशिश करें।

(सदर खुद्दामुल अहमदिया भारत)

129वां जलसा सालाना क़ादियान 27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और विल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें (1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलि-खित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (1 0 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परी-क्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
01872-501130 दफ़्तर
09682587713,09682627592
E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad